भारतीय लोकतंत्र में महात्मा गांधीजी के अहिंसात्मक विचारों की प्रासंगिकता

*प्रा. डॉ. विलास आघाव

म. गांधी एक युगपुरुष, पैगम्बर एवं आध्यात्मीक संत थे। उन्होने सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह के माध्यमसे राजनीती का आध्यात्मीकरण करणे का प्रयाय कीया। गांधीजी एक सच्चे कर्मयोगी थे जिन्होने अपने कर्म एवं चिन्तन से एक ऐसे दर्शनको जन्म दिया जिसे गांधीवाद नाम देना उचित है। गांधीवाद केवल एक विचारधारा या सिधान्त का नाम नही है, अपितु एक जीवन दर्शन है। म. गांधीने भारतीय राजनीतीमे प्रवेश कर, राष्ट्रीय आंदोलनको तिलक की तुलना मे और अधिक व्यापक स्वरुप प्रथन किया। गांधीने साधनो की पवित्रता का अनुसरण, गोखले से प्रेरणा लेकर किया, लेकीन सत्याग्रह के तरीके वे अपनाये जो तिलक ने बंग-भंग विरोधी आंदालनके पश्चात अपनाए थे। राजनीती मे रहते हुए भी गांधीजी निष्काम कर्मयोगी की तरह राजनीतीसे अनासक्त रहे। वे एक स्थितप्रज्ञ की तरह राजतीनी के समस्त झंझावातों का सामना करते रहे। राजनीतीकोभी धर्म माननेवाला यह महामानव सत्य ही महात्मा था। गांधीजी सत्य को साध्य तथा अहिंसा को सत्य की प्राप्ती का साधन मानते। अहिंसा साधन होते हुए भी परमावश्यक है क्योंकी अहिंसा के बीना सत्य को प्राप्त करना संभव नही है। उनका अहिंसा पर अड़ीग विश्वास था। उनकी मान्यता थी की मानवीय जिवन की सभी समस्याओं का समाधान अहिंसात्मक तरीकों से किया जाना संभव है। हिंसा, घृणा, व्देष, प्रतिहींसा, संघर्ष और वैमनस्य को जन्म देती है जबकी अहिंसासे प्रेम, भाईचारा, सहयोग, सद्भावना व समन्वय की भावना को बल मिलता है। अहिंसासे सर्जन होता है जबकी हिंसासे विध्वंस। अत:सभी महापुरुषोने सत्य, अहिंसा व करुणा का उपदेया थ्यिा। बुध्द, महावीर, ईसा व धर्म ग्रंथो का संदश भी यही है।

अहिंसा का अर्थ :- गांधीजीने अहिंसा का व्यापक अर्थो मे प्रयोग किया। उनके अनुसार अहिंसा का अर्थ है मन, वचन, कर्म से किसीका दिल न दु:खाना। तथा प्रत्येक पीडित व्यक्ती के प्रति प्रेम, सहयोग, दया व सहयोगकी भावना प्रदर्शित करना। किसी को मारना अहिंसा का नकारात्मक अर्थ है। गांधीजी नकारात्मक अहिंसा का समर्थन नही करते। गांधीजी की अहिंसा सकारात्मक अहिंसा है, जिसमे व्यक्ती स्वयं मन, वचन व कर्म से अहिंसा का पूर्णतया पालन करते हुए भी दुसरोंको सहायता व सहयोग कर भलाई के कार्य करता है। गांधीजी के अनुसार काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह इत्यादी दुर्गण भी हिंसा के प्रतिक है। अत: गांधीजी चाहते थे की प्रत्येक व्यक्ती अपने व्यक्तीगत व सार्वजनिक जीवन मे सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरीग्रह व ब्रम्हचर्य के सिध्दान्तो का मन, वचन व कर्म से पालन करे। अर्थात झुंठ बोलना, चोरी करना, जरुरतसे अधिक वस्तुओका संग्रह करना तथा मन वचन व कर्म से ब्रम्हचर्य का पालन न करना भी गांधीजी के अनुसार हिंसा है। गांधीजी के अनुसार सत्य व अहिंसा भी एक-दुसरे के पूरक है। एक के बीना दुसरे की प्राप्ती संभव नही है। गांधी जी के शब्दो मे, "अहिंसा वह ज्योती है जिसके व्दारा मुझे सत्य के दर्शन होते है। अहिंसा ही सत्यरुपी ईश्वर के दर्शन का सिधा व छोटा मार्ग है। सभी प्रकार के दुर्गुण व बुराइयॉ हिंसा के ही विविध रुप है तथा सभी प्रकारके सद्गुण और अच्छाइयॉ सत्य और अहिंसा के हि विभिन्न रुप है।"

अहिंसा का व्यवहारीक पक्ष :- गांधीजी अहिंसा के व्यवहारीक स्वरुप को भी हमारे सामने रखते है। गांधीजी चाहते थे की अहिंसा को व्यवहारीक स्वरुप प्रदान किया जाए, जिससे लोग भ्रमित न हो। उनके अनुसार हमे कोई भी कार्य करते समय उसके ध्येय, परिस्थीतीयॉ तथा व्यवहारीक पक्ष को भी ध्येखना चाहीए। यदी आप परमार्थ के लीए, दुसरो की जिवनरक्षा के लीए तथा लोककल्याण के लीए कोई हिंसा भी करते है तो वह उचीत है। किसान अन्न पैध करने दुसरो के जीवन की रक्षा करता है। सैनिक भी देशहीत तथा लोगो की रक्षा के लीए युध्द लडते है। जिवीत रहने के लीए भी थोडी-बहुत हिंसा का होना स्वाभावीक है। अत: गांधीजी अहिंसा के व्यवहारीक स्वरुप को अपनाने पर बल देते है। पवित्र उद्देशो तथा सार्वजनिक हित के लीए कि गयी हिंसा अनुचित नही है। किसान किटनाशकोका प्रयोग करके या खेती को नुकसान पोहचानेवाले कीडेमकोडे को मारता है तो यह अनुचित नही है। उन्होने तो यहा तक कहा है की यदी कोई प्राणी अत्याधीक कष्ट भोग रहा हो, मर्मान्तक पीडा से छटपटा रहा हो, उसके बचने की कोई भी उम्मीद न हो तथा उसका रोग भी नाइलाज हो तो और हमे लगे की 'अब इसकी मौत निश्चित है' तो हमे उसे स्वेच्छिक मृत्यु धारण करने या उसे मौत देकर, समस्त शारीरीक कष्टोसे मुक्ती देनी चाहीए। गांधीजी ऐसे प्राणी को मारना हिंसा नही मानते है। गांधीजीने अपने एक बछडे को उपर्युक्त परिस्थीतीयों के अधार पर विष देकर असीम कष्टोसे मुक्ती दिलायी थी। लेकीन हमारे पवित्र उद्देश, संबंधीत प्राणी का हीत तथा एक मात्र अंतीम रास्ता ही, हमारी हिंसा को उचित ठहरा सकते है।

अहिंसा वीरो का अस्त्र है : कुछ लोग व्यंग मे यह कहते है की अहिंसा कायरो को शोभा देती है, विरो को नही। ऐसे लोग अहिंसा को कायरता कहकर पुकारते है। गांधीजी के अनुसार अहिंसा

* प्रपाठक एवं विभागाध्यक्ष राजनीति विज्ञान, आदर्श महाविद्यालय, हिंगोली

कायरो का नही अपितु महाविरो का अस्त्र है। उनके मत मे अहिंसा मे कायरता के लीए कोइ स्थान नही है। अहिंसा का वरण करणे वाला व्यक्ती स्वयं कष्ट सहन करता है। स्वयं के हितो की बली थेकर भी थुसरो की सहायता करता है। अपने प्रति हिंसा करनेवाले का भी शुभचिंतक होता है। जिस क्रोध करना आसान है लेकीन क्रोध को पीना बहुत मुश्कील है, उसी प्रकार हिंसा करने की तुलना मे अहिंसा का पालन करने के लीए मजबुत आत्मबल, संकल्प शक्ती व त्याग की आवश्यकता होती है। गांधीजी कायरता को हिंसा से भी अधिक बुरा मानते थे। गांधीजी के अनुसार अहिंसा सर्वोच्च सथ्गुण है तो कायरता निकृष्टत्म थुर्गुण है। अहिंसक व्यक्ती कष्ट सहन करने को तत्पर रहता है, तो कायर व्यक्ती कष्ट पहुँचाने के लीए प्रवृत्त होते है। पूर्ण अहिंसा शौर्य का सर्वोत्तम रुप हैं। अहिंसा से आत्मीक प्रसन्नता प्राप्त होती है जब की हिंसा से आत्मा को थुःख व पश्चाताप की अग्नी मे जलना पडता है। अहिंसा से प्रेम पैथ होता है तो हिंसा से घृणा व विरक्ती। अहिंसा विकास का कारण है तो हिंसा नैतीक पतन का। अहिंसक व्यक्ती केवल मात्र ईश्वर से डरता है जबकी हिंसक व्यक्ती भयभीत होकर हथीयारोसे सज्जित होकर चलते है।

अहिंसा के प्रकार : गांधी जी की मान्यता है की थुनिया मे सभी व्यक्ती एक ही प्रकार के मनोबल के नही होते है। प्रत्येक व्यक्ती की निर्भिकता और आत्मबल एक नही हो सकते। अतः प्रत्येक व्यक्ती अपनी कष्ट सहन करने की क्षमता, निर्भिकता, आत्मबल और इच्छा शक्ती के आधारपर अलग-अलग प्रकार का अहिंसक आचरण अलग-अलग कारणो व ध्येयो को लेकर करते है। गांधीजी ने अहिंसा के तीन प्रकार बताए है।

1) वीरोंकी अहिंसा या जाग्रत अहिंसा : अहिंसा के इस उग्र रुप का पालन पुर्ण वीर और दृढ आत्मबल के व्यक्तीयो के थ्वरा किया जाता है। जो पुर्ण जाग्रत अवस्था मे अपनी आत्मा की आवाज के आधार पर, अहिंसा के प्रती पुर्ण समपर्ण कि भावना से इसको अंगीकार करते है। यह अहिंसा का सर्वोत्तम व आर्थ्श रुप है। वीरो की अहिंसा को अपनाने वाले व्यक्ती मे अत्याचार करने व हिंसा करने का शारीरीक बल होता है, लेकिन अहिंसा के प्रति अपनी नैतीक आस्था तथा दृढ-इच्छा शक्ती होने के कारण वह अपने ध्येय को प्राप्त करने के लीए कभी भी हिंसा का सहारा नही लेता है। विपरीत से विपरीत परिस्थितीयोमे भी वह अहिंसा के मार्ग पर अड़ीग रहता है। स्वंय कष्ट सहन करके भी अपने विरोधी के प्रति थुर्भावणा नही रखता है। ऐसे अहिंसक व्यक्ती के पास असीम शक्ती होती है। एक अकेला व्यक्ती भी अपने ध्येय को लेकर समाज व थेश को बथ्लने की शक्ती रखता है। यह बहुत प्रभावशाली होती है। इसको अपनाने वाले व्यक्ती मे असीमीत आत्मबल पैथ होता है।

2) निर्बलोकी अहिंसा या अवसरवाथ्योंकी अहिंसा : यह अहिंसा का व्यवहारीक रुप है जिसमे अहिंसा को एक निती के रुप मे अपनाया जाता है। यह निर्बल व्यक्तीयोंकी अहिंसा है, क्योंकी वे शक्ती या बल से कोई ध्येय प्राप्त नही कर सकते है तो मजबुरी मे अहिंसाका रास्ता अपनाते है। ऐसे व्यक्तीयोंकी अहिंसा मे नैतीक आस्था नही होती है। यह एक प्रकार का निष्क्रीय प्रतिरोध है। इसको अपनानेवाले व्यक्ती अपनी सुविधा तथा निर्बलता के कारण इसको अपनाते है। इसलीए यथी उनको शक्ती प्राप्त हो जाए या वे इतने शक्तीशाली हो जाए कि अपने विरोधी का सामना हिंसा से कर सकते है, तो वे अहिंसा को त्यागकर हिंसा को अपना सकते है। इस अहिंसा को अपनाने वाले व्यक्ती अहिंसा के प्रती नैतीक आस्था, समर्पण व श्रथ्थ नही रखते है। उनका उद्देश मात्र अपने ध्येय को प्राप्त करना होता है। यथी इस अहिंसा को ईमानथरी, साहस से एक निती के रुप मे अपनाया जाए तो उससे अपने उद्देशोको प्राप्त करने मे सफलता मील सकती है। लेकीन इसका स्वभाव जाग्रत अहिंसा के समान नही होता है। गांधीजीने अहिंसा के इस रुप को अस्वीकार कीया है। उन्होने कहा, "निर्बलोकी अहिंसा जैसी कोई चीज नही है, थुर्बलता और अहिंसा परस्पर विरोधी है।"

3) कायरोकी अहिंसा या बुजथ्लोकी अहिंसा : कभी कभी कायर और डरपोक लोग जो अपने विरोधी का सामना नही कर सकते है, अपने आपको अहिंस बताते है। यह अहिंसा का निकृष्टत्तम रुप है जिसे गांधीजी अहिंसा नही अपीतु हिंसा की संज्ञा थेते है। कायरो की इस प्रवृत्ती को अहिंसा नही वरन् निष्क्रीय हिंसा कहा जाना उचीत है। गांधीजीने कहा की कायरता और हिंसा मे से एक का चुनाव करना हो तो मै हिंसा को चुनुंगा। कायरता अपमानजनक, अमानवीय और अनैतीक है। गांधीजी ने कहा है की, "कायरता और अहिंसा, पानी और आग की भॉती एक साथ नही रह सकते" एक कायर व्यक्ती के मन मे अपने विरोधी के प्रति घृणा, हिंसा होती है, लेकीन वह अपनी बुझथ्ली के कारण पलायान करते है। इसकी अलोचना करते हुए गांधीजीने कहा, "यथी नपुंसकता को छीपाने के लीए अहिंसा की आवश्यकता होतो ह्रथ्य मे हिंसा की भावना होने पर हिंसक बनना अच्छा है।"

गांधीजी की अहिंसात्मक प्रजातंत्र की अवधारणा : गांधीजी की कल्पना के अहिंसात्मक राज्य की सबसे महत्वपुर्ण विशेषता यह थी की वह अपना कार्य जनता को समझा बुझाकर चलायेगा, शक्ती के थ्वरा नही। जिसमे पुलीस होगी जो की सशस्त्र भी हो सकती है, कीन्तु व आज-कल पुलीस से सर्वथा भिन्न होगी। गांधीजी के शब्थे मे, पुलीसवाले अहिंसामे विश्वास करने वाले होंगे; वे जनता के सेवक होंगे, स्वामी नही। जनता स्वभावतः उनकी साह्यता करेगी, और परस्परीक सहयोग के थ्वरा वे थ्निप्रतिथ्नि घटते जानेवाले अपराधोसे सुगमतापुर्वक निबर लेंगे। पुलीसवालो के पास कुछ शस्त्र होंगे, कीन्तु उनका प्रयोग बहुत कम कीया जाएगा। वास्तव मे पुलीसवाले सुधारक होंगे। इसी प्रकार अहिंसात्मक राज्य मे जेलखाने होंगे; कींतु वे भी आजके जेलखानेसे भिन्न। गांधीजी अपराध को एक प्रकारका रोग समजते थे और उसको सामाजीक विषमताओका परिणामा मानते थे, इसलीए वे जेल को सुधारगृह, एक अस्पताल एवं एक विद्यालय बनाना चाहते थे। उसका कार्य अपराधी को अहिंसा का पाठ पढाकर सुधार करणा होगा। अहिंसावाथी लोकतंत्र के नागरीकगण सत्यप्रीय, इमानथर, निर्भीक तथा आत्मसंयमी होंगे, इसलीए उसमे कोई अपराधी नही होगा और सरकार को अपनी सत्ता का थुरुपयोग करने का कोई प्रलोभन नही होगा। जिवन

शांतीमय होगा और परस्पर साह्यता और सहयोग के उपर आधारीत होता। यदी सरकार कभी सन्मार्गसे भटकेगी, तो नागरीकगण सत्ता के दुरुपयोग का प्रतिरोध करके उसे फीरसे सही मार्ग पर ले आएंगे। सत्ता के दुरुपयोग का सत्याग्रह व्दारा प्रतिरोध करने की जनता की शक्ती गांधीजी के अहिंसावादी लोकतंत्र का एक विशिष्ट लक्षण होगा। अहिंसक प्रजातंत्र कोई स्थायी व्यवस्था नही है, वरन इस दौरान सुधारात्मक कार्यक्रमो व प्रकीयाओ के माध्यमसे लोकतांत्रीक विकेंद्रीकरण पर आधारीत आदर्श समाज के लक्ष को प्राप्त करने का प्रयास कीया जाएगा। गांधीजी की मान्यता थी की हिंसा लोकतंत्र की आत्माका हनन करती है। अतः अहिंसक लोकतंत्र मे भी सत्ता का आधार विकेंद्रीकरण, सत्य और अहिंसा इत्यादी उच्च नैतीक व अध्यात्मीक सिध्दान्त होंगे। गांधीजी चाहते थे की प्रत्येक व्यक्ती के व्यक्तीमत्वका सर्वांगीन विकास हो। प्रत्येक कमजोर से कमजोर व्यक्ती का भी विकास हो तथा उसे राज्य मे वही स्थान प्राप्त हो जो एक संपन्न व्यक्ती को प्राप्त होता है।

अहिंसात्मक समाज के मुख्य लक्षण : गांधीजीने अपने कल्पना के अहिंसात्मक समाजमे शासन के विषय मे कोई विवरण नही है, तथापी उसकी मोटी रुप-रेखा काफी स्पष्ट है। उससे हमको उनके राजनितीक विचारोंकी एक झाँकी मिल जाती है और एक ऐसा मापदंड मिल जाता है जिससे की हम आज आपने देश मे पाई जानेवाली स्थीतीयों का मुल्यांकन कर सकते है।

1) राज्यहिनता :- म. गांधीजीने राज्य को एक अनावश्यक एवं अस्वभावीक समझने के कारणोपर विचार करेंगे गांधीजी राज्य को अनावश्यक समझते है क्यों की आदर्श समाज मे उसकी कोई आवश्यकता नही रहेगी। वास्तवीक व्यवहार मे राज्य की आवश्यकता इसलीए होती है की, मनुष्य मे कुछ समाज विरोधी प्रवृत्तीयाँ होती है और उनको नियंत्रीत करणा आवश्यक समझा जाता है। गांधीजीने अपने आदर्श समाजसे राज्य का बहिष्कार इसलीए कीया क्योंकी उनका विश्वास था कि राज्य का मुल हिंसा मे है। उनके विचारानुसार 'राज्य हिंसा का एक संघठीत रुप है।'

2) विकेन्द्रीकरण : अहिंसात्मक दुसरी मुख्य विशेषता हे यह होगी की उसमे राजनीतीक तथा आर्थीक दोनो क्षेत्रो मे अत्याधिक विकेंद्रीकरण होगा, क्योंकी केंद्रिकरण की पध्दती अहिंसा के साथ असंगतिबध्द है। आधुनिक राज्य इतना अधिक शक्तीशाली इसलीए होता है क्योंकी उसमे अत्याधीक केंद्रिकरण पाया जाता है। अत्याधीक केंद्रिकरण जिवन को अत्याधीक जटील बना देता है। गांधीजीने राजनितीक विकेंद्रीकरण और आर्थीक विकेंद्रीकरणका समर्थन किया है। बडे उद्योगोका उन्मुलन करके उनके स्थान पर कुटीर उद्योग धंदोकी स्थापणा करना है। अहिंसात्मक राज्य की स्थापणा के लीए यह नितांत आवश्यक है।

3) वर्णव्यवस्था : गांधीजी की कल्पना का अहिंसात्मक लोकतंत्र वर्णव्यवस्था के सिध्दांत पर अधारीत होगा। गांधीजी के समाज मे चार मुख्य वर्ण होगे जो की ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शुद्र नामक प्राचीन वर्णो के अनुरुप होंगे, और जिनके सदस्य अपने अपने वंशानुगत व्यवसायोंको करेंगे। इन वर्णो मे उँच-निच का कोई भेदभाव नही होगा, और प्रत्येक व्यक्ती अपने व्यवसायको अपनी अजिवीका अर्जित करने एवं समाज की सेवा करने के लीए करेगा, धन का संचय करने के लीए नही।

4) अस्तेय : गांधीजीके अहिंसात्मक लोकतंत्र एक अधार अस्तेय होगा। किन्तु अस्तेय पूर्ण नही हो सकता ; जिवीत रहने के लीए तथा जिवन को स्वस्थ एंव सुखी बनाने के लीए कुछ भौतीक वस्तुओंको अपने पास रखना नितांत आवश्यक ही है। परंतु व्यक्तीगत संपत्ती न्युनतम से अधिक नही होनी चाहीए। गांधीजी स्वयं अपने पास कोई ऐसी वस्तु नही रखते थे जो की उनके लीए परमावश्यक नही थी। भवीष्य मे आवश्यकता के लीए बचत करने के सिध्दांत मे उनका कोई विश्वास नही था। उनके मतानुसार सभ्यता आवश्यकताओको बढाने मे नही वरन् कम करणे में है।

5) ट्रस्टीशीप : अस्तेय के सिध्थंत से ही सम्बध्द ट्रस्टीशिपका सिध्दांत है ज्योकी समाज मे समानता लाने के गांधीवादी उपाय का एक अभिन्न अंग है। भारतीय समाजवादी निर्धन वर्ग की साहयता करने के लीए जमींदारो तथा देशी नरेरो को उनकी संपत्ती तथा उनके विशेषाधीकारोसे वंचीत कर देना चाहते थे। गांधीजी कानुनथ्थरा या शक्तीव्दारा किसी की संपत्ती को छीन लेने के विरुध्द थे। उनका तर्क था की, हिंसात्मक कार्यवाहीसे न तो गरीबोका कोई हित होता है और न समाज का कोई लाभ होता है, इसलीए इस समस्या को अहिंसात्मक ढंग से हल करने के लीए गांधीजीने ट्रस्टीशिप के सिध्थंत का प्रतिपादन कीया। इस सिध्दांत का तात्पर्य यह है की धनी लोगो को इस बात का विश्वास दिला दिया जाए की उनके पास जो धन है, वह सब जनता के परिश्रम का फल है, केवल अपनेही प्रयासोका फल नही। धन एक सामाजीक उत्पत्ति है। वह चाहते थे की धनी लोगो मे समग्र समाज के प्रति अपने कर्तव्यो और दायीत्व की भावना जागृत हो जाए और वे अपने धन का अपने आपको स्वामी नही वरन ट्रस्टी समझे। धनियो को अपने धन मे से केवल उतना ही लेना चाहीए जितना की उनकी उचीत आवश्यकताओंकी पुर्ती के लीए अपेक्षीत हो, शेष का प्रयोग उनको संपुर्ण समाज के हितो के लीए करना चाहीए। दुसरे शब्दो मे, यह कहा जा सकता है की धनी लोग चाहे जितना भी धन कमा सकते है, किन्तु उनको यह याद रखना चाहीए की वह धन समाज का है और वे समाज की और से उसके ट्रस्टी है। गांधीजी का अहिंसात्मक लोकतंत्र व्यवहारतः सामाजीक व्यवस्था का सर्वोत्तम एवं उत्कृष्ट रुप होगा, विकेंद्रीकरण, वर्गव्यवस्था, अस्तेय, ट्रस्टीशिप के सिध्दांतो पर यह अधारीत होगा।

संदर्भ ग्रंथ

1) अहिंसा का मुख्य अधार आत्मीक-शक्ती या आत्मबल है। 2) अन्तःकरण की पवित्रता या नैतीक मुल्यो मे पुर्ण आस्था वाला व्यक्ती हि अहिंसा अपनाता है। 3) अहिंसा वीरोंका अभुषण है, कमजोरोका नही। 4) अहिंसा की शक्ती और प्रभाव हिंसा से कई गुणा अधिक होती है। 5) अहिंसा एक निती नही अपितु शुध्द ध्येय है। ध्येय की तुलना मे भी अहिंसा अधिक महत्वपुर्ण है। 6) अहिंसक व्यक्ती ईश्वर तथा सत्य पर अटल विश्वास रखता है। 7) अहिंसक व्यक्ती अपने विरोधी का भी शुभचिंतक होता है तथा वह उसका हृथ्य परिवर्तन करके अपने ध्येय को प्राप्त करता है। 8) अहिंसा मे अनैतिकता, झुठ, दुर्गुण, घृणा, क्रोध, वैमनस्य ई. के लीए कोई स्थान नही है। 9) अहिंसा मानवसमाज का सहजतत्व है। यह प्राकृतीक व स्वभावीक है। 10) संपुर्ण संसार अहिंसा व प्रेम की शक्ती से हि संचलीत होता है। यह दुनिया का सबसे शक्तीशाली शस्त्र है।